वाख

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» वाख: ललद्यद की काव्य-शैली

प्रश्न 1 (आसान). ललद्यद की काव्य-शैली को किस नाम से जाना गया है?
उत्तर – वाख

प्रश्न 2 (आसान). वाख के माध्यम से ललद्यद किस विचार के ऊपर उठने की बात करते हैं?
उत्तर – जाति और धर्म की संकीर्णताओं के ऊपर

प्रश्न 3 (मध्यम). ललद्यद धार्मिक आडंबरों के बारे में क्या रुख अपनाते हैं?
उत्तर – वे धार्मिक आडंबरों का विरोध करते हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). अध्याय के अनुसार ललद्यद के वाख लंबे समय तक जीवित क्यों रहे–एक कारण लिखिए।
उत्तर – क्योंकि उनमें जनता की सरल भाषा का प्रयोग हुआ, जिससे कश्मीरी जनता उन्हें याद रखकर गुनती रही।

» ललद्यद की भक्ति-दृष्टि: जाति-धर्म के संकीर्ण विचारों का विरोध

प्रश्न 5 (आसान). ललद्यद किन चीज़ों का विरोध करती हैं?
उत्तर – जाति-धर्म की संकीर्णताओं और धार्मिक आडंबरों का।

प्रश्न 6 (आसान). ललद्यद के अनुसार सबसे बड़ा मूल्य क्या है?
उत्तर – प्रेम।

प्रश्न 7 (मध्यम). “भक्ति का जुड़ाव जीवन से हो” का मतलब क्या है?
उत्तर – भक्ति सिर्फ भीतर की भावना नहीं, रोज़ के व्यवहार–बोलचाल, आचरण, और इंसानों के साथ व्यवहार–में दिखे।

प्रश्न 8 (कठिन). अगर कोई धार्मिक नियम के नाम पर दूसरों के साथ भेदभाव करे, तो ललद्यद की दृष्टि से उसे कैसे देखा जाएगा?
उत्तर – ललद्यद इसे संकीर्ण सोच और धार्मिक आडंबर जैसा मानेंगी, क्योंकि वे भेदभाव के ऊपर उठकर प्रेम/समभाव को सर्वोच्च मानती हैं।

» भाषा-शैली और लोकप्रियता: संस्कृत/दरबारी बोझ के स्थान पर जनभाषा

प्रश्न 9 (आसान). ललद्यद की वाख-शैली में भाषा का खास रूप क्या है?
उत्तर – जनता की सरल भाषा

प्रश्न 10 (आसान). संस्कृत/दरबारी बोझ के स्थान पर क्या प्रयोग हुआ?
उत्तर – जनभाषा

प्रश्न 11 (मध्यम). भाषा की सरलता लोकप्रियता में कैसे मदद करती है?
उत्तर – सरल भाषा समझ में जल्दी आती है, इसलिए लोग उसे अपनाकर याद रखते और पीढ़ियों तक बोलते हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). ललद्यद की भक्ति-दृष्टि और भाषा-शैली में क्या संबंध बनता है, एक कारण लिखो।
उत्तर – जब भक्ति-दृष्टि प्रेम और जीवन-सम्बन्ध पर जोर देती है, तब उसे प्रभावी बनाने के लिए जनता तक सीधे पहुँचने वाली जनभाषा अपनाई जाती है–और यही लोकप्रियता की जड़ बनती है।

» वाख 1 का भाव: ईश्वर-प्राप्ति के ‘व्यर्थ प्रयास’

प्रश्न 13 (आसान). 'रस्सी कच्चे धागे की' में मुख्य संकेत क्या है?
उत्तर – साधन/तरीका कमजोर होना

प्रश्न 14 (आसान). कच्चे सकोरे में पानी टपकने से क्या समझ आता है?
उत्तर – कोशिश टिकती नहीं, इसलिए प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं

प्रश्न 15 (मध्यम). कवयित्री 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य दिखाती हैं?
उत्तर – ईश्वर से मिलने/आत्मा के अपने घर लौटने की तीव्र इच्छा और बेचैनी

प्रश्न 16 (कठिन). 'व्यर्थ प्रयास' का भाव समझाते हुए लिखिए कि सही लक्ष्य होने पर भी साधन गलत हों तो क्या परिणाम होता है?
उत्तर – लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जो तरीका साधन के रूप में चुना गया है, वह असंगत/कमज़ोर हो तो कोशिश करते रहने पर भी सफलता नहीं मिलती; प्रयास निष्फल रहते हैं, जैसे कच्ची रस्सी से नाव न खिंचे और कच्चे सकोरे से पानी न टिके।

» वाख 2 का भाव: बाह्याडंबर का विरोध और समभाव की शर्त

प्रश्न 17 (आसान). वाख 2 में 'खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं' का संकेत किस ओर है?
उत्तर – सिर्फ बाहरी भोग/खाने को लक्ष्य मानने से कुछ नहीं मिलता।

प्रश्न 18 (आसान). 'न खाकर बनेगा अहंकारी' से कवयित्री क्या कहना चाहती है?
उत्तर – सिर्फ उपवास/त्याग भी अगर घमंड पैदा करे तो गलत है।

प्रश्न 19 (मध्यम). 'सम खा तभी होगा समभावी' में 'सम' का अर्थ क्या है और समभाव क्यों जरूरी है?
उत्तर – 'सम' का अर्थ संतुलन है; समभाव इसलिए जरूरी है क्योंकि वही अंतःकरण का रास्ता खोलता है।

प्रश्न 20 (कठिन). 'खुलेगी साँकल बंद द्वार की' रूपक को वाख 2 के संदेश से जोड़कर समझाइए।
उत्तर – 'बंद द्वार' भीतर के मार्ग का प्रतीक है; 'साँकल' को खोलने की कुंजी समभाव/अंतःकरण का संतुलन है। बाह्याडंबर या अहंकार द्वार बंद रखता है।

» वाख 3 और 4 का केंद्रीय विचार: आत्मालोचन, सद्कर्म, भेदभाव-विरोध और ईश्वर की सर्वव्यापकता

प्रश्न 21 (आसान). वाख 3 में कवयित्रा किस तरह का भाव दिखाती हैं–आत्मालोचन या सिर्फ बाहरी घटना?
उत्तर – आत्मालोचन (अंदर की चूक/दिशा पर विचार)

प्रश्न 22 (आसान). वाख 4 में 'थल-थल में बसता है शिव' का मतलब क्या है?
उत्तर – ईश्वर हर जगह मौजूद है (ईश्वर की सर्वव्यापकता)

प्रश्न 23 (मध्यम). 'भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां' पंक्ति को केंद्रीय विचार से जोड़कर समझाओ।
उत्तर – क्योंकि ईश्वर एक और सर्वव्यापी है, इसलिए धर्म के नाम पर भेद/ऊँच-नीच नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 24 (कठिन). वाख 3 और 4 को साथ पढ़कर बताओ–सही दिशा/प्रयत्न और सच्चा ज्ञान, भेदभाव-विरोध से कैसे जुड़ते हैं?
उत्तर – वाख 3 में आत्मालोचन से संकेत मिलता है कि मार्ग/प्रयत्न सही होना चाहिए। वाख 4 में उसी सच्चे ज्ञान को आत्म-ज्ञान और ईश्वर की सर्वव्यापकता से जोड़ा गया है। जब ईश्वर हर जगह दिखेगा और व्यक्ति खुद को समझेगा, तब भेदभाव का व्यवहार अपने आप घटेगा–यही सद्कर्म की जड़ बनती है।

» प्रश्न-अभ्यास के आधार पर पंक्ति-व्याख्या व अर्थ ग्रहण

प्रश्न 25 (आसान). 'घर जाने की चाह' में 'घर' किसका रूपक है?
उत्तर – ईश्वर/स्वत्व के लक्ष्य का, जहाँ आत्मा लौटना चाहती है।

प्रश्न 26 (आसान). प्रश्न-अभ्यास में 'भाव स्पष्ट कीजिए' का काम क्या होता है?
उत्तर – दिए गए पंक्ति/शब्द का भावार्थ और अर्थ लिखना।

प्रश्न 27 (मध्यम). 'कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए गए प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?'–उत्तर में कारण किस तरह लिखना चाहिए?
उत्तर – कारण यह कि प्रयास गलत दृष्टि/गलत समझ से हो रहा है और लक्ष्य तक नहीं पहुँच रहा; सिर्फ कोशिश पर्याप्त नहीं।

प्रश्न 28 (मध्यम). Q6 में 'यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?'–तुम्हें क्या करना है?
उत्तर – कविता में वही वाक्य/पंक्तियाँ ढूँढकर लिखनी हैं जहाँ हठयोग जैसी कठिन साधना के बावजूद लक्ष्य न मिलने की बात कही गई हो।

प्रश्न 29 (कठिन). 'बंद द्वार' की साँकल खोलने के उपाय का अर्थ कैसे लिखोगे–केवल उपाय का नाम या भाव सहित कारण भी?
उत्तर – दोनों–'बंद द्वार' को अवरोध मानकर उपाय लिखना, और साथ यह कि यह उपाय उस अवरोध/भ्रम को कैसे हटाता है (दृष्टि बदलती है/अंदर खुलाव आता है)।

प्रश्न 30 (कठिन). 'ज्ञानी' से कवयित्री का अभिप्राय–इसे 'पंक्ति-आधारित उत्तर' में कैसे मजबूत करोगे?
उत्तर – बताओ कि ज्ञानी वह है जो भीतर का सत्य पहचान ले; और जहाँ कवयित्री ने 'पहले स्वयं को जानो' या 'अहं/भ्रम से परे' वाला भाव व्यक्त किया है, उन्हीं पंक्तियों का सहारा देकर उत्तर पुख्ता करोगे।

» रचना और अभिव्यक्ति: आज के समाज में भेदभाव की हानि और समाधान

प्रश्न 31 (आसान). भेदभाव से समाज में तनाव क्यों बढ़ता है?
उत्तर – क्योंकि लोग अपमान/कम आँके जाने के कारण दूरी और गुस्सा महसूस करने लगते हैं।

प्रश्न 32 (आसान). भेदभाव विकास को कैसे रोकता है?
उत्तर – प्रतिभा दब जाती है और योग्य लोगों को समान अवसर नहीं मिलते।

प्रश्न 33 (मध्यम). आपसी भेदभाव मिटाने के लिए दो ठोस सुझाव लिखिए।
उत्तर – स्कूल/समुदाय में सबको समान सम्मान व समान अवसर देना; भेदभाव के खिलाफ स्पष्ट नियम और शिकायत का रास्ता रखना।

प्रश्न 34 (कठिन). एक पैराग्राफ में हानि और समाधान–दोनों जोड़कर लिखिए (कम से कम 6-7 पंक्तियाँ)।
उत्तर – भेदभाव से प्रतिभा दबती है, विकास रुकता है, रिश्तों में दूरी आती है और अशांति फैलती है। समाधान के लिए समान अवसर-सममान, मज़ाक/अपमान पर रोक, भेदभाव के खिलाफ नियम, शिकायत का आसान रास्ता और सभी की सहभागिता जरूरी है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. ललद्यद की 'वाख' काव्य-शैली को अध्याय के संकेतों के आधार पर पहचानिए–किन बातों से पता चलता है कि यह केवल कविता नहीं, भक्ति का मार्ग दिखाने वाला तरीका है?

› देखो, अध्याय किस तरह कबीर, मीरा, तुलसी, रसखान के काव्य-प्रकारों की तरह 'वाख' को अलग काव्य-शैली बताता है।
› फिर प्वाइंट पकड़ो–ललद्यद जाति और धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठने की बात करते हैं।
› अगला संकेत लो–वे धार्मिक आडंबरों का विरोध करते हैं।
› फिर सबसे जरूरी मूल्य पहचानो–प्रेम को सबसे बड़ा मूल्य बताया गया है।
› अंत में भाषा की खासियत देखो–पंडिताई/दरबारी बोझ के बजाय जनता की सरल भाषा का प्रयोग।

उत्तर – यह 'वाख' इसलिए भक्ति का मार्ग दिखाती शैली है क्योंकि इसमें जाति-धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठना, धार्मिक आडंबरों का विरोध, प्रेम और समभाव को प्रमुख मूल्य बनाना, और लोक-जीवन से जुड़ी सरल भाषा के जरिए लोगों तक संदेश पहुँचाना–ये सब इसकी पहचान हैं।

उदाहरण 2. एक लड़का अपने दोस्त से कहता है–"तुम दूसरे धर्म के हो, इसलिए मैं तुम्हारे साथ नमाज़/पूजा या किसी काम में शामिल नहीं होऊँगा।" ललद्यद की भक्ति-दृष्टि के अनुसार इसका क्या गलत पहलू है, और सही रास्ता क्या होगा?

› पहचानो–यह बात जाति/धर्म की संकीर्ण सोच पर टिकी है, क्योंकि 'तुम अलग हो' के आधार पर दूरी बनाई जा रही है।

› ललद्यद धार्मिक आडंबरों और भेदभाव के खिलाफ हैं, इसलिए सिर्फ पहचान देखकर दूरी बनाना उनकी दृष्टि में सही नहीं।

› ललद्यद 'प्रेम को सबसे बड़ा मूल्य' मानने की बात करती हैं–मतलब रिश्तों में प्रेम, बराबरी और मदद का भाव होना चाहिए।

› 'भक्ति का जुड़ाव जीवन से'–इसलिए दोस्ती/सहयोग जीवन के अच्छे कामों में दिखना चाहिए, न कि धर्म-भेद से दीवार खड़ी करना।

उत्तर – यह संकीर्णता और भेदभाव है; गलत पहलू है 'धर्म/पहचान' के आधार पर दूरी बनाना। सही रास्ता है प्रेम और समभाव के साथ बराबरी रखना और जीवन से जुड़े अच्छे सहयोग/व्यवहार करना।

उदाहरण 3. क्यों ललद्यद (वाख) की रचनाएँ कश्मीरी जनता की स्मृति में लंबे समय तक जीवित रहीं? कारण भाषा-शैली के आधार पर 2 बिंदुओं में लिखो।

› उस समय की संस्कृत/दरबारी बोझिल भाषा की जगह जनता की सरल भाषा का प्रयोग पहचानो।

› समझ आने और अपनेपन के कारण जनता की याद/वाणी में टिकने का कारण लिखो।

उत्तर – ललद्यद ने संस्कृत और दरबारी बोझ के बजाय जनता की सरल भाषा का प्रयोग किया। यही सरलता रचनाओं को सुनने-याद रखने लायक बनाती है, इसलिए उनकी वाख सैकड़ों साल से कश्मीरी जनता की स्मृति और वाणी में जीवित रहीं।

उदाहरण 4. वाख 1 की पंक्तियाँ "रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव" और "पानी टपवेफ कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे" में 'व्यर्थ प्रयास' का भाव समझाइए। फिर बताइए 'घर जाने की चाह' किस भाव को दिखाती है?

› पहली पंक्ति देखें: 'रस्सी कच्चे धागे की' यानी साधन कमजोर है–इसीलिए 'नाव' खींचने में सफलता नहीं मिलती।

› दूसरी पंक्ति देखें: 'कच्चे सकोरे' से पानी टपकता है–यानी मेहनत करके भी परिणाम टिकता नहीं, इसलिए प्रयास व्यर्थ है।

› अब 'घर जाने की चाह' समझिए: यह ईश्वर-प्राप्ति/मिलन की आत्मीय बेचैनी है। बेचैनी तो सही है, पर प्रयासों का तरीका व्यर्थ साबित हो रहा है।

› निष्कर्ष लिखें: ईश्वर-प्राप्ति की चाह सही हो सकती है, लेकिन अगर साधन/तरीका असंगत या कमजोर हो तो प्रयास निष्फल होता है।

उत्तर – 'व्यर्थ प्रयास' का भाव है कि कवयित्री सफलता नहीं पा रही, क्योंकि साधन ही कच्चे हैं–कच्ची रस्सी नाव नहीं खींच पाती और कच्चा सकोरा पानी टिकने नहीं देता। 'घर जाने की चाह' ईश्वर-प्राप्ति की आत्मीय बेचैनी को दिखाती है, जो लक्ष्य तक न पहुँचने पर और घेर लेती है।

उदाहरण 5. वाख 2 की पंक्तियों "खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी, सम खा तभी होगा समभावी" का भाव समझाइए और बताइए कि यहाँ समभावी बनने की शर्त क्या है।

› पहले कारण समझो: "खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं" का मतलब है केवल बाहरी भोग/खाना ईश्वर-प्राप्ति जैसा लक्ष्य नहीं देता।

› दूसरा कारण समझो: "न खाकर बनेगा अहंकारी" का मतलब है सिर्फ उपवास/त्याग करके अगर घमंड आ जाए, तो साधना उलटी पड़ती है।

› तीसरी शर्त निकालो: "सम खा तभी होगा समभावी" में 'सम' संतुलन है–अंदर का मन भोग-त्याग के बीच स्थिर रहे।

› रूपक से निष्कर्ष जोड़ो: "खुलेगी साँकल बंद द्वार की" बताता है कि समभाव से भीतर का मार्ग खुलता है।

उत्तर – यहाँ समभावी बनने की शर्त है–अंतःकरण में संतुलन और मन का सम रहना; न तो केवल बाहरी भोग से लक्ष्य मिलता है, न दिखावे वाला त्याग अहंकार बनकर बाधा बनता है। संतुलित मन ही भीतर के 'बंद द्वार' की साँकल खोलता है।

उदाहरण 6. वाख 4 की दो पंक्तियाँ–"थल-थल में बसता है शिव ही, भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां।" और "ज्ञानी है तो स्वयं को जान, वही है साहिब से पहचान।" –इनसे केंद्रीय विचार (भेदभाव-विरोध, ईश्वर की सर्वव्यापकता, आत्म-ज्ञान) को 3 बिंदुओं में कैसे समझोगे?

› पहला बिंदु पहचानो: 'थल-थल में बसता है शिव' – ईश्वर हर जगह है, इसलिए किसी को छोटा/अलग मानने की जरूरत नहीं।

› दूसरा बिंदु जोड़ो: उसी ईश्वर-भाव से 'भेद न कर'–अर्थात हिंदू-मुसलमां के नाम पर फर्क/दूरी मत बनाओ।

› तीसरा बिंदु आत्म-ज्ञान: 'ज्ञानी है तो स्वयं को जान' – असली ज्ञान बाहर की बहस नहीं, भीतर की पहचान है; वही 'साहिब' की समझ बनती है।

उत्तर – इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि (1) ईश्वर सर्वव्यापी है–हर जगह मौजूद है, (2) इसलिए भेदभाव नहीं करना चाहिए, (3) सच्चा ज्ञान आत्म-ज्ञान से आता है–पहले खुद को समझो, फिर साहिब की पहचान होती है।

उदाहरण 7. पंक्ति-व्याख्या कीजिए: "खा-खाकर वुफछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।" यहाँ कवयित्री क्या कहना चाहती हैं?

› पहले पंक्ति में 'खाकर' और 'न खाकर' को देखें–ये साधना के दो छोर हैं

› अब समझें कि कवयित्री 'सिर्फ तरीके' से होने वाली साधना पर नहीं रुकती

› मतलब निकालिए: खाना/उपवास अपने-आप में लक्ष्य नहीं; अगर उससे अहंकार बने तो साधना बिगड़ती है

› अंत में भाव लिखिए: असली बात–आत्म-परिवर्तन, सही दृष्टि; केवल बाहरी क्रिया पर्याप्त नहीं

उत्तर – कवयित्री कहना चाहती हैं कि सिर्फ खाना या सिर्फ उपवास करके कुछ वास्तविक उपलब्धि नहीं होगी; यदि न खाने से या खाने से अहंकार बन जाए, तो साधना उल्टी दिशा में चली जाती है। असली लक्ष्य बाहरी क्रियाओं से नहीं, सही समझ और भीतर के परिवर्तन से मिलता है।

उदाहरण 8. आपके विचार लिखिए: (क) आपकी दृष्टि में भेदभाव के कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है? (ख) आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

› भेदभाव की परिभाषा समझो: किसी व्यक्ति को उसके आधार पर कम आँकना

› हानि लिखो: प्रतिभा दबना, विकास रुकना, रिश्तों में तनाव/अशांति

› उदाहरण जोड़ो: स्कूल/समाज में दूरी, मज़ाक/अपमान, अवसर न मिलना

› समाधान लिखो: समान अवसर और सम्मान, स्कूल/समुदाय के नियम, शिकायत का रास्ता

› समापन में स्पष्ट करो कि व्यवहार बदलना ही असली उपाय है

उत्तर – कद्ध भेदभाव से देश और समाज को बहुत हानि होती है। जब किसी व्यक्ति को उसकी जाति, धर्म, रंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर कम आँका जाता है, तो उसकी प्रतिभा दब जाती है और उसे आगे बढ़ने के समान अवसर नहीं मिलते। इससे देश का विकास रुकता है। साथ ही रिश्तों में दूरी और तनाव बढ़ता है–स्कूल-मोहल्ले में साथ बैठना/खेलना/काम करना कठिन हो जाता है। मन में डर, गुस्सा और शक पैदा होने लगता है, परिणामस्वरूप समाज में अशांति फैलती है।

खद्ध भेदभाव मिटाने के लिए हमें ठोस कदम उठाने चाहिए। स्कूल और समुदाय में सभी बच्चों और लोगों को समान सम्मान और समान अवसर देना चाहिए, किसी का मज़ाक या अपमान नहीं होना चाहिए। साथ ही भेदभाव के खिलाफ स्पष्ट नियम बनाकर उनकी पालना करानी चाहिए। शिकायत का सरल रास्ता हो और गलत करने वालों को समझाकर रोका जाए। हर कार्यक्रम में सभी की सहभागिता सुनिश्चित करने से आपसी समझ बढ़ती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- बोर्ड पर 2-3 पंक्तियों में लिखो: वाख = भक्ति-मार्ग + समभाव + लोकभाषा
- NCERT में 2-3 पंक्तियों में 'विरोध + मूल्य + जीवन-जुड़ाव' लिखकर उत्तर पूरा करो।
- उत्तर में 'जनभाषा' और 'स्मृति में जीवित'–दोनों कारण लिखो।

- बोलकर लिखो: 'लक्ष्य की चाह सही, साधन कमजोर/गलत–इसलिए व्यर्थ प्रयास'।
- समभाव और 'बंद द्वार की साँकल' रूपक का संबंध जरूर लिखो।
- उत्तर में 'आत्मालोचन/सुषुम-सेतु' को वाख 3 और 'भेद न कर/थल-थल/स्वयं को जान' को वाख 4 से जोड़कर लिखो।
- 'किन पंक्तियों में' वाले प्रश्न में सिर्फ अर्थ नहीं–सही पंक्तियाँ उद्धृत/लिखो।
- उत्तर में कद्ध और खद्ध अलग-अलग शीर्षक के साथ लिखो; कारण + ठोस सुझाव ज़रूर दें।

एक नज़र में रिवीज़न

› - वाख: भक्ति+समभाव, आडंबर-विरोध, सरल लोकभाषा

› भक्ति = प्रेम, समभाव; भेदभाव/आडंबर का विरोध

› - संस्कृत/दरबारी बोझ हटे, जनभाषा आई–यही लोकप्रियता का कारण

› - कच्ची रस्सी/टपकता सकोरा = साधन गलत, प्रयास व्यर्थ

› समभाव = अंतःकरण का संतुलन; भोग/घमंड दोनों बाधा।

› - वाख 3: आत्मालोचन + सही दिशा; वाख 4: समता + ईश्वर-सर्वव्यापकता

› रूपक पहचानो, भाव लिखो, कारण दो, पंक्तियाँ चुनो।

› हानि: प्रतिभा दबे, विकास रुके; समाधान: समानता+नियम